अजायब बानी

मासिक पत्रिका

मई—2023

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका
अजायब ✲ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–पहला	मई–2023

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर (शब्द) 2

सतसंग परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
गुरु का महत्त्व 3

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को अभ्यास में बिठाने से पहले
सिमरन का झाड़ू 17

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
कर्म और बीमा 21

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
मेरे जीवन का संदेश 31

धन्य अजायब 32
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 254 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर,
गुरु बिना मैं नाहीं होर x 2

1 गुरु की टेक रहो दिन रात
जांकी कोए न मेटे दात, x 2 गुरु गुरु.....

2 गुरु परमेश्वर एको जान,
जो तिस भावे सो परवान, x 2 गुरु गुरु.....

3 गुरु चरनीं जां का मन लागै,
दुःख दर्द भरम तां का भागे, x 2 गुरु गुरु.....

4 गुरु की सेवा पाऐ मान,
गुरु ऊपर सदा कुरबान, x 2 गुरु गुरु.....

5 गुरु का दर्शन देख निहाल,
गुरु के सेवक की पूर्ण घाल, x 2 गुरु गुरु.....

6 गुरु के सेवक को दुःख न व्यापै,
गुरु का सेवक दह दिस जापै, x 2 गुरु गुरु.....

7 गुरु की महिमा कथन ना जाऐ,
पारब्रह्म गुरु रहा समाऐ, x 2 गुरु गुरु.....

8 कहो 'नानक' जां के पूरे भाग,
गुरु चरनी तां का मन लाग, x 2 गुरु गुरु.....

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु की महिमा

कबीर साहब की बानी | 29 अप्रैल 1977 | सॅनबोर्टन–अमेरिका

जो गुरु बसैं बनारसी, सिष्य समुन्दर तीर।
एक पलक बिसरै नहीं, जो गुन होय सरीर।।

गुरु और शिष्य के लिए दूरी का कोई फासला नहीं, चाहे गुरु या शिष्य कितनी भी दूर क्यों ना हो, यह मायने नहीं रखता क्योंकि शब्द और आत्मा की रफ्तार किसी भी कार और हवाई जहाज़ की रफ्तार से कम नहीं। जिनकी एक बार चढ़ाई हो जाती है, उन लोगों को पता है कि आत्मा की रफ्तार कितनी तेज है। आत्मा की चाल चार प्रकार की होती है, *चींटी मार्ग, मकड़ी मार्ग, मछली मार्ग* और *बिहंगम (पक्षी) मार्ग।*

चींटी मार्ग–जिस तरह चींटी दीवार पर चढ़ती है और गिर जाती है। उसी तरह हमारी आत्मा शरीर से निकलती है और गिर जाती है।

मकड़ी मार्ग–जिस तरह मकड़ी छत से ज़मीन पर आती है उसे किसी दीवार के सहारे की जरुरत नहीं, वह अपने अंदर से ही तार निकालती है और नीचे से खाना खाकर वापिस उसी के जरिए चढ़ जाती है।

मछली मार्ग–जिस तरह मछली चढ़ाई की आशिक़ होती है, जहाँ से पानी आ रहा होता है, चाहे पानी पचास फुट की ऊँचाई से आ रहा हो, मछली उसी तरफ चढ़ जाती है।

बिहंगम मार्ग–जिस तरह पक्षी पहाड़ से उड़ा ज़मीन पर, ज़मीन से उड़ा पहाड़ पर चढ़ जाता है उसे कोई दिक्कत महसूस नहीं होती। सन्तों की आत्मा की चाल पक्षी की तरह है। सन्त आँख बंद करते हैं तो मालिक के दरबार में और आँख खोलते हैं तो दुनिया में हैं।

इसी तरह हमारे आश्रम के खेत में कुछ मजदूर मजदूरी कर रहे थे। एक अच्छे–भले मजदूर का अंत समय आया, उसे ऐसा महसूस हुआ कि हुजूर महाराज उसे लेने के लिए हवाई जहाज लेकर आए हैं। बस! याद करने की देर थी, हुजूर फौरन हाज़िर हो गए। यह भी समझाने के लिए ही है, सेवक को मालूम होता है कि सतगुरु हवाई जहाज लेकर आए हैं या कार लेकर आए हैं। सतगुरु का हवाई जहाज या कार दुनिया के मटेरियल से नहीं बने होते। उनके हवाई जहाज या कार की स्पीड दुनिया के हवाई जहाज और कार की स्पीड से बहुत तेज होती है।

कबीर साहब कहते हैं कि गुरु बनारस में रह रहे हैं और शिष्य समुन्द्र के दूसरी तरफ रह रहा है अगर शिष्य ने सुरत को 'शब्द' में मिला लिया है तो गुरु एक सेकंड भी शिष्य से दूर नहीं होते, उसके साथ रहते हैं।

मैं पंजाब गया, वहाँ एक साधु था, वह अच्छी करामात रखता था। दिल में ख्याल आया कि यहाँ से पानी पीकर चले। नहर के किनारे उस साधु का डेरा था। हम जीप से उतरे, जैसे यहाँ महफ़िल लगी हुई है इसी तरह उसके पास भी महफ़िल लगी हुई थी।

वह साधु सिर के ऊपर पानी डालता था। मुझे देखकर कहने लगा, ''आपके पीछे एक आदमी खड़ा है।'' मैंने कहा, ''नहीं।'' उस साधु ने फिर बहुत जोर देकर कहा कि मुझे आपके पीछे कोई आदमी दिखाई दे रहा है। मैं खामोश रहा, मुझे पता था कि मेरे साथ कौन है। वहाँ बैठी सारी महफ़िल परेशान थी कि इसके साथ ऐसा कौन इंसान है। सतगुरु एक सेकंड भी अपने शिष्य को नहीं छोड़ता। वह हर एक के साथ रहता है लेकिन पूरे प्यार और प्रेम के बिना सामने नहीं होता।

सब धरती कागद करुं, लेखनि सब बनराय।
सात समुन्द की मसि करुं, गुरु गुन लिखा न जाय।।

कबीर साहब कहते हैं कि जो गुरु एक सेकंड भी हमारा साथ नहीं छोड़ता। चाहे गर्मी है, सर्दी है, दुःख है, भूख है, सेवक के ऊपर कैसी भी क्यों न बनी हो, वह आकर संभाल करता है। **गुरु की महिमा** बयान नहीं की जा सकती अगर मैं सारी धरती का कागज बना लूँ, सारी वनस्पति काटकर उसकी कलमें बना लूँ और सात समुन्द्रों की स्याही बना लूँ फिर भी मैं अपने **गुरु की महिमा** नहीं लिख सकता। गुरु साहब कहते हैंः

कितु मुखि गुरु सालाहीऐ गुरु करण कारण समरथु।।

हमारी ऐसी जुबान नहीं जिससे गुरु की महिमा बयान कर सकें क्योंकि गुरु करण–कारण है, समरथ है, हर जगह व्यापक है।

बूड़ा था पर ऊबरा, गुरु की लहरि चमक्क ।
बेड़ा देखा झाँझरा, ऊतरि भया फरक्क ।।

कबीर साहब कहते हैं कि जब मैंने देखा कि इस दुनिया की नाव में बहुत सारे सुराख हैं और इसमें पानी भर रहा है, मैं डूब जाऊँगा। जब मुझे गुरु की तारने वाली नाव मिली तो मैं दुनिया के जहाज से फ़ौरन उतरकर गुरु के जहाज पर सवार हो गया।

पहिले दाता सिष भया, जिन तन मन अरपा सीस।
पाछे दाता गुरु भये, जिन नाम दिया बकसीस।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि दुनिया में आकर वह ताकत कभी भी मर्यादा भंग नहीं करती बेशक ऐसी महान आत्मा सच्चखंड से सीधी आती है। इस मर्यादा को कायम रखने के लिए यहाँ आकर वह जरूर गुरु धारण करती है, कुछ दिन दुनिया में शिष्य कहलवाती है और वक्त आने पर वही महान ताकत हमें नाम की बक्शीश करती है।

सतनाम के पटतरे, देवे को कछु नाहिं ।
क्या लै गुरु संतोषिये, हवस रही मन माहिं।।

सेवक के दिल में चाव है, प्यार है कि मैं अपने सतगुरु को कोई चढ़ावा दूँ। दुनिया का धन-दौलत हमारे साथ नहीं जाएगा। यह तो इस दुनिया का ही सिक्का है, अगली दुनिया में यह किसी काम नहीं आएगा। देने वाली चीज सतनाम है जो सदा रहनी है और सतनाम उसका अपना है इसलिए आप कहते हैं कि दिल में हवस ही रही कि मैं गुरु को क्या दूँ?

मन दीया तिन सब दिया, मन की लार सरीर।
अब देवे को कछु नहीं, यों कहे दास कबीर ।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि हमारे और परमात्मा के दरमियान मन ही रुकावट है इसलिए मैं अपने मन को सतगुरु के चरणों में रखता हूँ। जिसने मन दे दिया उसने साथ में अपना तन भी दे दिया। जिसने तन, मन और धन दे दिया अब देने के लिए क्या रह गया?

तन मन दिया तो भल किया, सिर का जासी भार।
कबहूं कहै कि मैं दिया, घनी सहैगा मार।।

कबीर साहब कहते हैं कि बहुत अच्छा किया जो गुरु को तन, मन, धन सौंप दिया, तेरे सिर का वजन उतर गया अगर देकर फिर कहें कि मैंने दिया है तो बहुत मार सहेगा क्योंकि आगे 'मैं' वाले को अंदर नहीं जाने देते। 'मैं' के कारण ही हम परमात्मा से बिछड़े हुए हैं।

पिछले वक्त में आज की तरह महात्मा डेरे में बैठकर नाम का प्रचार नहीं करते थे। आमतौर पर पैदल चलकर ही लोगों को नाम के बारे में बताते थे क्योंकि तब रेलगाड़ी और हवाई जहाज के साधन नहीं थे। हुज़ूर आमतौर पर एक मिसाल दिया करते थे कि एक प्रेमी बुढ़िया थी, जब गुरु उसके घर आए तो उसने गुरु की खूब सेवा की और उन्हें अच्छा खाना खिलाया। सन्त-सतगुरु दयाल हुए और माता से कहने लगे, ''माता, आँखें बंद कर, तुझे ले चलें।'' जब माता ने आँखें बंद की तो वे उसे

मालिक के दरबार में ले गए। मालिक के दरबार में जो रूहें पहले पहुंची हुई थी वे कहने लगी कि देखो, इस माता ने अच्छी करनी की है, दान–पुण्य किया है तो सन्त इसे अपने सिर पर उठाकर लाए हैं। बुढ़िया के दिल में अहंकार आ गया और उसने कहा, ''मैंने इन्हें अच्छा खाना खिलाया है, इन्होंने मुझे उठाकर कोई पुण्य नहीं किया।'' अब गुरु से उसका वजन नहीं सहा गया तो वे उससे बोले, ''अच्छा माता आँखें खोल।'' माता ने जब आँखें खोली तो वह फिर ज़मीन पर बैठी थी, अहंकार यह चीज़ है।

महाराज सावन सिंह कहा करते थे, ''सेवा करके अहंकार करना इस तरह है जैसे हम अच्छा पुलाव बनाकर उसके ऊपर राख बिखेर देते हैं।''

तन मन ता को दीजिये, जा के विषया नाहिं।
आपा सबही डारि कै, राखै साहिब माहिं।।

कबीर साहब कहते हैं कि तन, मन उसे देना है जो दुनिया के विषय–विकारों से बचा हुआ है। एक सतगुरु ही ऐसा है, वही एक महान आत्मा है जो इस दुनिया के विषय–विकारों रूपी तूफान से बचा हुआ है। अगर अच्छे भाग्य हों और ऐसे सतगुरु मिल जाएं तो हमें अपना तन, मन उन्हें दे देना चाहिए। अपने सिर से बोझ उतारकर उनके हवाले कर देना चाहिए।

तन मन दिया तो क्या हुआ, निज मन दिया न जाय ।
कहै कबीर ता दास से, कैसे मन पतियाय।।

बाहर से तो सारे ही मन दे देते हैं क्योंकि स्थूल दुनिया में स्थूल मन, सूक्ष्म में सूक्ष्म मन और कारन में कारन मन काम करता है।

तन मन दिया आपना, निज मन ता के संग।
कहै कबीर निरभय भया, सुन सतगुरु परसंग।।
निज मन तो नीचा किया, चरन कंवल को ठौर।
कहै कबीर गुरुदेव बिन, नजर न आवै और।।

कबीर साहब कहते हैं कि मन ही रुकावट थी, मन गुरु के चरणों में रख दिया, अब जिस तरफ भी झाँकते हैं गुरु ही गुरु दिखाई देता है।

गुरु सिकलीगर कीजिये, मनहिं मस्कला देइ।
मन का मैल छुड़ाइ के, चित दरपण करि लेइ।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि कैसा गुरु करना है? जो लोग लोहे का काम करते हैं उन्हें सिकलीगर या लुहार कहते हैं। वे लोग लोहे के काम के माहिर होते हैं और लोहे की जंग को अच्छी तरह साफ़ कर देते हैं। इसी तरह हमारे मन को भी जन्मों-जन्मों की मैल लगी हुई है और गुरु 'शब्द-नाम' के साथ हमारे जन्मों-जन्मों की मैल को उतारकर साफ कर देते हैं। हम लोग जल्दबाज़ी करते है लेकिन सन्तमत में जल्दबाज़ी की जरूरत नहीं क्योंकि सफर काफी लम्बा होता है और हमें अपने मन को अच्छी तरह साफ करने की जरूरत है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

जन्म-जन्म की इस मन को मल लागी काला होया सियाओ।।

हमारे मन को जन्म-जन्मांतरों से मैल लगी हुई है, यह राख जैसा काला हो चुका है अगर हम इसके ऊपर सिमरन का रेगमाल फेरते रहेंगे तो हमारा मन भी साफ हो जाएगा, उजला निकल आएगा।

सिष खांडा गुरु मस्कला, चढ़ै नाम खरसान।
सबद सहै सनमुख रहै, तो निपजै शिश सुजान।।
गुरु धोबी सिष कापड़ा, साबुन सिरजनहार।
सुरत सिला पर धोइये, निकसै जोत अपार।।

इस दुनिया में गुरु धोबी बनकर आता है और शिष्य कपड़ा है। 'सुरत-शब्द' के अभ्यास से इसे साफ़ करना है। रोज-रोज धोने से अभ्यास करने से हमारी आत्मा की जोत चमक जाएगी।

महाराज मिसाल देकर समझाया करते थे कि धोबी को अपने करतब पर मान होता है। धोबी, हलवाई का कपड़ा भी ले लेता है और जेंटलमैन का कपड़ा भी ले लेता है। जेंटलमैन का कपड़ा थोड़ा–सा मलने से साफ हो जाता है और हलवाई का कपड़ा एक या दो बार भट्ठी में धोने से साफ होता है। इसी तरह सन्त भी यह नहीं देखते कि यह पापी है या पुन्नी है। सन्तों को अपने नाम पर मान होता है कि हम जिसके अंदर अपना नाम रख देंगे वह एक दिन जरूर साफ इंसान बनकर मालिक के देश जाएगा।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ गढ़ काढै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

कबीर साहब हमें खबरदार करते हुए बताते हैं कि गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा है। घड़े को पकाने के लिए कुम्हार उसे खूब बाहरी चोटें लगाता है ताकि यह साफ़ और सुन्दर बन जाए फिर उसे आग के अंदर रखता है कि घड़ा अच्छी तरह पक जाए। कुम्हार जिस घड़े को पीटता है उसके अंदर हाथ जरूर रखता है अगर कोई बीमारी आती है तो उस वक़्त हमें सतगुरु की दया समझनी चाहिए कि हमारी गढ़त हो रही है, हमें बनाया जा रहा है, हमारे ऊपर सतगुरु का हाथ है। उस वक्त दया से फायदा उठाकर हमें ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन करना चाहिए लेकिन हम कहते हैं कि गुरु ने हमारी सहायता नहीं की, गुरु को छोड़ दो।

सतगुरु महल बनाया, प्रेम गिलावा दीन्ह।
साहिब दरसन कारने, सबद झरोखा कीन्ह।।

अब आप कहते हैं कि उस परमात्मा ने यह महल बनाया है, इसके अंदर प्रेम रखा है। प्रेम लेकर इस महल के अंदर जाने का रास्ता और अपने मिलने का रास्ता परमात्मा ने अपने आप ही बनाया हुआ है, यह किसी इंसान ने नहीं बनाया। जिस तरह परमात्मा ने हमारे नाक, कान, आँख, मुँह और नीचे के सुराख रखे हैं उसी तरह उसने अपने मिलने का

झरोखा भी खुद ही बनाया है, यह सुराख बहुत छोटा है। कबीर साहब उसे बाल का दसवाँ हिस्सा कहते हैं और गुरु नानक साहब उसे राई(सरसों के दाने) का दसवाँ हिस्सा कहते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं कि हमारा मन हाथी बन चुका है जो इस बाल के दसवें हिस्से से निकल नहीं रहा। मन को उतना ही बारीक करने की जरुरत है जितना वह सुराख है तो ही हम उसके बीच से पार हो सकते हैं। पलटू साहब कहते हैं:

मन महीन कर लीजिये जब त्यों लागे हाथ।

जब आपको रास्ता मिल जाता है, सतगुरु मिल जाता है उस वक़्त अपने मन को छोटा कर लें और अपना रास्ता जल्दी से जल्दी तय कर लें।

गुरु साहिब तो एक हैं, दूजा सब आकार।
आपा मेटै गुरु भजे, तब पावै करतार।।

कबीर साहब कहते हैं कि गुरु और परमात्मा एक ही है बाकी सब कुछ उसने बनाया है, यह उसका अपना ही खेल है। जो ताकत इस दुनिया के अंदर शरीर धारण करके आई है, हमें अपना आप छोड़कर सब कुछ उस ताक़त के हवाले कर देना चाहिए।

ज्ञान समागम प्रेम सुख, दया भक्ति बिस्वास।
गुरु सेवा तें पाइये, सतगुरु चरन निवास।।

सतगुरु सबसे पहले हमें ज्ञान करवाता है कि इस दुनिया से तुम्हारे साथ जाने वाली कोई वस्तु नहीं। सत्य एक परमात्मा है और उसे आप अपने अंदर ही पा सकते हैं। जहाँ हम जीवों को मारकर खा रहे होते हैं वहां पर वे हमें हर एक पर दया करना सिखाते हैं और समझाते हैं कि इस धरती पर पशु–पक्षी भी जीने का उतना ही अधिकार रखते हैं जितना इंसान रखता है। विश्वास के बिना हम दुनिया में भी कामयाब नहीं हो सकते।

गुरु मानुष करि जानते, ते नर कहिये अंध।
महादुखी संसार में, आगे जम के बंध।।

कबीर साहब कहते हैं कि जो लोग गुरु को इंसान समझते हैं, वे अंधे आए और अंधे ही चले गए। वे न यहाँ कोई सुख प्राप्त करते हैं और न आगे मालिक के दरबार में पहुँच सकते हैं, यम उनको फंदा डाल देते हैं।

गुरु मानुष करि जानते, चरनामृत को पानि।
ते नर नरकै जाइँगे, जन्म-जन्म ह्वै स्वान।।

कबीर साहब कहते हैं कि जो लोग गुरु के प्रसाद की कद्र नहीं करते, उस प्रसाद को एक मामूली इंसान के हाथ का प्रसाद समझते हैं, वे कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते बल्कि वे निचली योनियों में जाऐंगे, कुत्ते का जन्म धारण करेंगे।

कबीर ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।।

कबीर साहब कहते हैं कि वे इंसान गुरुमत में आकर भी अंधे हैं जो गुरु को मालिक से अलग समझते हैं। हरि रूठ जाए तो ठिकाना है अगर गुरु रूठ जाए तो शिष्य के लिए कोई ठिकाना नहीं है। सहजो बाई ने कहा था, ''अगर हरि रूठ जाए तो मैं गुरु के पास चली जाऊंगी अगर गुरु रूठ जाए तो हरि भी मेरी मदद नहीं करेगा।''

हमारा मन पल-पल चालाकी करता है। जब हुज़ूर हमारे आश्रम में आए तो वहाँ एक आदमी आया, वह हुज़ूर के साथ ऐसी बातें कर रहा था जैसे एक मामूली इंसान के साथ बात करते हैं। उस आदमी को कोई बीम ारी थी, उसने महाराज जी से कहा, ''मैंने आपको चिट्ठी डाली थी, आपने कहा था कि किसी से इलाज करवाओ बीमारी दूर हो जाएगी लेकिन मेरी बीमारी दूर नहीं हुई।'' मैंने प्यार से उसे एक तरफ बुलाकर कहा, ''भाई! क्या महाराज जी ने तेरा कर्ज देना है, तू महाराज को क्या समझता है?''

मेरे इतना कहने से ही उसकी आत्मा को धक्का लगा और वह बोला, ''मैं गलती कर रहा हूँ।'' गुरु इंसान नहीं होता, इंसान का तन धारण करके आता है और इंसान भी शरीर नहीं होता, यह भी आत्मा है। हमने आत्मा को उस परमात्मा के साथ मिला देना है अगर आप आत्मा की आँखों से देखेंगे तो आपको आगे 'शब्द' ही दिखेगा।

गुरु हैं बड़ गोबिंद तें, मन में देखु बिचार।
हरि सुमिरै सो वार है, गुरु सुमिरै सो पार।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि गुरु भगवान से बड़े हैं। आप भगवान को करोड़ बार भी याद करें तो वे आपकी मदद नहीं करेंगे, आपके सामने नहीं आएंगे। आप गुरु को एक पल ही याद करें, वे आपकी मदद के लिए आकर खड़े हो जाएंगे। इतिहास में आज तक ऐसा नहीं लिखा कि भगवान ने आकर किसी की मदद की हो अगर किसी शिष्य की मदद की है तो उसके गुरु ने ही आकर की है। इतिहास भरा पड़ा है कि गुरु कैसे शिष्यों की संभाल करते हैं और उन्हें बचाते हैं।

सिख इतिहास में एक मशहूर किस्सा है। पेशावर का एक लड़का जिसका नाम भाई जोगा था, वह बचपन से ही गुरु गोबिन्द सिंह जी की सेवा में लग गया। जब वह बड़ा हुआ तो माता-पिता ने चाहा कि उसकी शादी कर दें इसलिए वे उसे वापिस ले गए। वह गुरु गोबिन्द सिंह जी का खास सेवादार था। वह जाना नहीं चाहता था। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा, ''भाई, कोई बात नहीं तू जा, जब तुझे हमारा हुक्मनामा मिले उसे देखते ही तू उसी वक्त आ जाना।'' उसने कहा, ''अच्छा जी, सतवचन।'' और भाई जोगा चला जाता है।गुरु भी अच्छे सेवक का इम्तिहान जरूर लेते हैं।

हिन्दुस्तान में रिवाज़ है शादी में चार फेरे लेते हैं। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने एक सिख को चिट्ठी देकर भाई जोगा के पीछे भेज दिया और उस सेवक से कहा कि जब यह दो फेरे ले ले तो यह चिट्ठी जोगा के आगे कर देना।

घर जाकर भाई जोगा अपनी शादी की तैयारियों में लग जाता है। जब उसने दो फेरे ले लिए और दो फेरे रहते थे जिनमें ज्यादा से ज्यादा एक मिनट लगना था, सिख ने चिट्ठी उसके आगे कर दी उस पर लिखा था कि जब भी तुझे यह चिट्ठी मिले जो भी काम कर रहा हो बीच में ही छोड़कर चले आना। उसने वहीं पैर रोक लिए और रिश्तेदारों से कहा, ''भाई, गुरु का हुक्म आ गया है, मैं अब फेरे नहीं ले सकता।'' रिश्तेदारों ने बहुत समझाया कि आपके लिए यह ठीक नहीं, दो फेरे लेने में कितना समय लगता है? भाई जोगा कहने लगा, ''नहीं, मैं गुरु का सिख हूँ, मुझे गुरु के हुक्म में पूरा उतरना है।'' दो फेरे नहीं लिए और वहां से चल पड़ा।

मंज़िल पार करते-करते सहारनपुर आ गया। एक धर्मशाला में रात काट रहा था, वहाँ बैठे हुए मन में सोच रहा था कि मेरे जैसा गुरु का सिख कौन हो सकता है जिसने दो फेरे भी नहीं लिए और परी जैसी औरत को छोड़ आया। अहंकार हमेशा इंसान को पटककर चलता है और अहंकार के

साथ कोई न कोई चीज़ तो आनी ही है। अंदर काम उत्पन्न हुआ, दिल में ख्याल आया कि चलो वेश्या के पास।

गुरु गोबिन्द सिंह जी उस समय श्रीआनंदपुर साहिब में थे। भाई जोगा जब वेश्या के पास गया तो गुरु गोबिन्द सिंह जी एक चौकीदार बनकर वेश्या के घर चले गए क्योंकि सिख ने तो अपनी ड्यूटी पूरी निभा दी थी अब गुरु की बारी थी। जब भाई जोगा ने कहा कि मैंने अंदर जाना है तो गुरु गोबिन्द सिंह जी उसको चौकीदार के रूप में कहते हैं, ''देख भाई, ऊपर बादशाह गया हुआ है।'' अब बड़े आदमी से डरता अंदर कौन जाता है इसलिए वह वापिस आ गया। थोड़े समय बाद काम का जोश फिर आया तो वह फिर चला गया। चौकीदार के रूप में गुरु साहब कहने लगे कि अभी बादशाह आया नहीं है, ऊपर ही है। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सारी रात उस शिष्य का पहरा दिया। सुबह तीन बजे गुरु गोबिन्द सिंह जी ने उसे झिड़का, ''ओ भले मानस, तीन बजे हैं, तू भजन नहीं करता, अभ्यास पर नहीं बैठता।'' जब भजन याद कराया तब वह पछताया कि ओह! मैं सारी रात क्या करता रहा?

श्रीआनंदपुर साहिब सहारनपुर के नज़दीक ही पड़ता है। जब अगली सुबह गुरु गोबिन्द सिंह जी के दर्शनों के लिए गया तो वे उससे पूछते है, ''भाई जोगा, रास्ते का हाल सुना, रास्ता कैसे कटा।'' और साथ में आँखें बंद कर लेते हैं। भाई जोगा ने गुरु साहब से पूछा कि महाराज जी आपको रात की उनिन्द्रता है जो आप बातें करते-करते सो रहे हैं। गुरु साहब हँसकर कहने लगे, ''हाँ भाई, रात एक सिख के पहरे पर थे।'' भाई जोगा को फ़ौरन याद आया की पहरा तो मेरा ही था मुझे इन्होंने बचाया, वह गुरु साहब के पैरों में गिर गया। इस तरह भाई जोगा की भगवान ने मदद नहीं की उसके गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह जी ने मदद की।

इसी तरह हमारी रिश्तेदारी का एक मशहूर किस्सा है। चौदह साल के एक लड़के को मोटी माता निकली उसने एक बार हुज़ूर के दर्शन किए

थे। उसकी माता को नाम मिला हुआ था। हुज़ूर महाराज ने उसे सपने में दर्शन दिए और कहा कि आज से चार दिन बाद मैंने इसे ले जाना है, जितनी आपको इसकी जरुरत है अब किसी और को इसकी जरुरत है।

वहाँ हम आठ–दस सतसंगी बैठे थे, तकरीबन सभी सतसंगियों को हुज़ूर ने दर्शन दिए और कहा, ''आज से चार दिन बाद रात को बारह बजे इसे लेकर जाना है।'' तय दिन पर सारे सतसंगी वहाँ भजन पर बैठे थे तकरीबन दस बजे कई सतसंगियों को हुज़ूर ने दर्शन दिए और कहा , ''मैं आ गया हूँ, इसे लेकर जाना है, चाय तैयार करो, जब चाय पिलाओगे मैं तब इसे लेकर जाऊंगा।''

उस लड़के की माता चाय बनाने गई। उसके दिल में यह अफ़सोस नहीं था कि मेरा चौदह साल का जवान लड़का चला जायेगा लेकिन खुशी थी कि मेरे लड़के को मेरे गुरु लेने के लिए आए हैं। वह चाय बनाती हुई साथ में शब्द बोलती है, उसने चाय लाकर लड़के के आगे रखी और कहा, ''यह पी ले।'' मेरे गले में झप्पी डालते हुए वह लड़का बहुत ऊँची आवाज में बोला, ''महाराज जी आ गए हैं।'' यह कहते हुए उस लड़के ने शरीर छोड़ गया। मैंने उसकी बाहें धीरे से अपने गले से निकाली और उसे चारपाई पर डाल दिया।

उस वक्त किसी भगवान ने मदद नहीं की या भगवान ने दिलासा नहीं दिया। सिर्फ हुज़ूर कृपाल ही थे जिन्होंने आकर दिलासा दिया। घर के जितने भी रिश्तेदार थे, वे बिलकुल नहीं रोए। सारी रात भजन पर बैठे रहे और हुज़ूर के शुक्रगुजार हुए।

कबीर साहब कहते हैं कि गुरु और मालिक एक हैं, गुरु का हाथ मालिक का हाथ होता है। गुरु की आँख भगवान की आँख होती है और गुरु का बोल भगवान का ही बोल होता है।

***

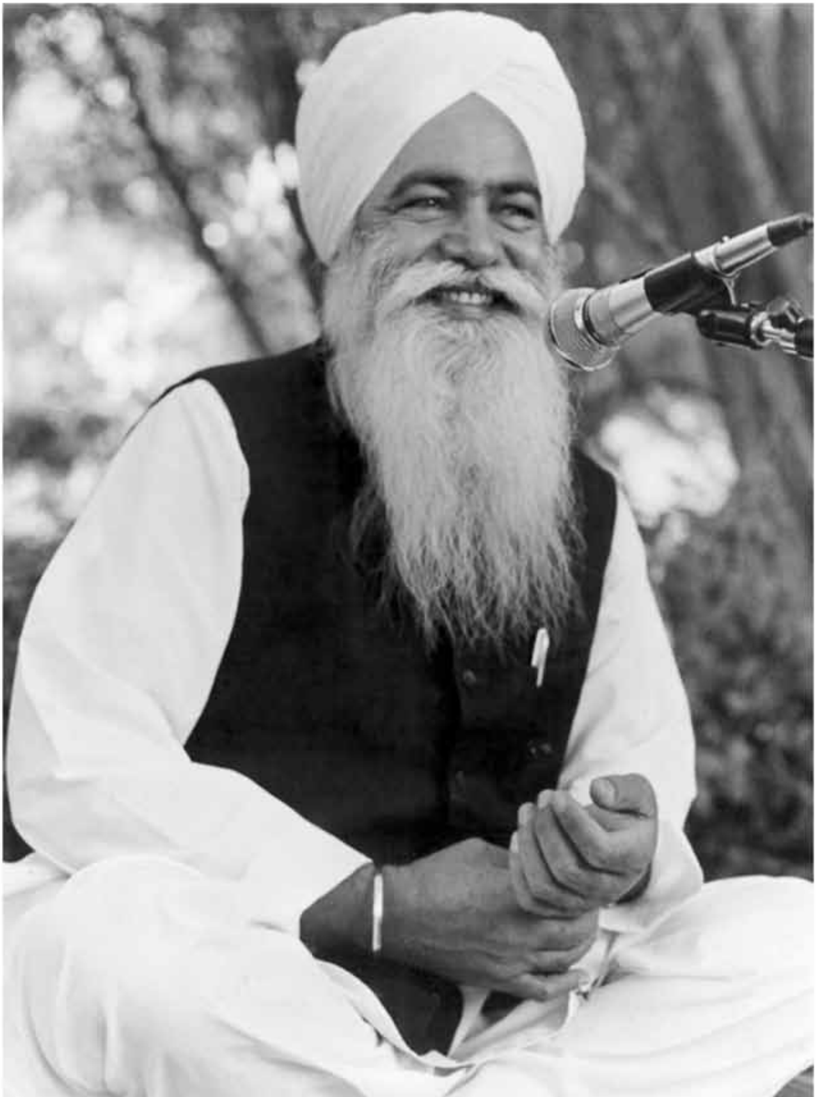

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

सिमरन का झाड़ू

10 अक्टूबर 1981

अभ्यास में बैठते वक्त जरूरी है कि हम अपने मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना, प्रेम–प्यार से करना है। आप यह मत समझें कि जो मिनट–सेकंड मालिक की याद में बिताया है वह लेखे में नहीं है। गुरु साहब कहते हैं:

हर धन के भर लेओ भंडार, नानक गुर पूरे नमस्कार।

हम जो थोड़ा–थोड़ा अभ्यास कर रहे है, यह एक किस्म का भंडार भर रहे हैं। बेशक जीव को इस बात का पता नहीं कि मेरा कुछ बन रहा है लेकिन हम जितना भी भजन–अभ्यास कर रहे हैं उसे हमारे सतगुरु लेखे में रखते हैं। फर्क इतना ही है कि जिस तरह बच्चा नादान होता है, वह कौड़ियों का आशिक होता है, उसे पाउंड की कीमत पता नहीं उसी तरह अगर सतगुरु हमें जल्दी से इसका तजुर्बा दे दें तो हम इस रूहानियत को दुनिया की मान–बड़ाई या बीमारी पर खर्च कर देते हैं।

गुरु हमारी कमाई को संभालकर रखने के लिए चुपके से जमा करते रहते हैं लेकिन पिता अपनी कमाई हुई पूँजी भी समझदार बच्चे के हवाले कर देता है क्योंकि पिता जानता है कि यह बच्चा इसे बेकार नहीं गवाएगा।

इसी तरह जो शिष्य फौलाद का दिल बनाकर भजन–अभ्यास करता है, गुरु की याद बनाए रखता है, जहां गुरु ही रह जाता है बाकी दुनिया के ख्याल उड़ जाते हैं। ऐसी महान आत्मा जब अभ्यास पर बैठती है तो देवता भी उसे चारों तरफ से घेर लेते हैं कि यह जीव मातलोक में अभ्यास पर बैठा है, भजन कर रहा है। देवता भी उसकी जय–जयकार करते हैं।

जब सतगुरु ऐसा साफ दिल देखते हैं तो वे अपनी बरकतें लेकर उस शिष्य के अंदर बैठ जाते हैं। उसे उसके हक़ से भी ज्यादा दे देते हैं क्योंकि परमात्मा की भक्ति बहुत ही अमोलक धन है जो पैसों से, जोर–जबरदस्ती से नहीं मिलती।

भक्ति भक्तन हूँ बन आई।

यह भक्तों की जायदाद है। बेटा–बेटी, सेवक कोई भी भक्ति करे, वह सतगुरु से यह दात प्राप्त कर लेता है। परमात्मा की भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का नाश करने वाली है। ये पांच डाकू किसी ताकत, पढ़ाई–लिखाई या कोई समाज बदलने से वश में नहीं आते सिर्फ नाम की कमाई से ही वश में आते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

मन मूसा पिंगल पया पी पारा हर नाम।

जैसे चूहे को पारा पिला दें तो वह मरता नहीं जीवित रहता है लेकिन कोई हरकत नहीं कर सकता, हमारे मन की भी यही हालत है। जिस सच्चे सुख की तलाश में देवी–देवता, राजा–महाराजा भटकते हैं वह सुख दुनिया की हुकूमत, धन–दौलत या समाजों में नहीं। सच्चा सुख, सच्ची इज्जत, सच्ची बड़ाई वापिस अपने घर सच्चखंड पहुँचकर ही है।

सच्चा प्यार हमारे सतगुरु कुल–मालिक परिपूर्ण परमात्मा ही करते हैं बाकी दुनिया के प्यार में ग़रज़ और अशांति है। सतगुरु जिसे एक बार अपने घर में सच्चा सुख, सच्ची इज्जत बख्श देते हैं फिर उससे वापिस नहीं लेते, यही परमात्मा की सबसे बड़ी रीत है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ये रीत भली भगवंतै।

यह उनकी बहुत अच्छी रीत है कि जिसे एक बार बख्श देते हैं उससे वह बख्शीश वापिस नहीं लेते। हम दुनिया की मान–बड़ाई जानते ही हैं कि जो आदमी एक दिन मान–बड़ाई देते हैं, अखबारों में नाम छपवाते हैं, जय–जयकार करते हैं, ऊपर से फूल बरसाते हैं लेकिन जब दूसरी पार्टी

का जोर पड़ जाता है या हुकूमत हाथ से निकल जाती है फिर वही लोग अखबारों में कीचड़ उछालते हैं, गले में जूतों का हार तक पहनाते हैं, कौन–कौन सी बदनामी नहीं करते। हमारे परमपिता परमात्मा हमें बड़ाई देकर उसे वापिस नहीं लेते, पछताते नहीं।

यह भक्ति सच्चा सुख, सच्ची इज्जत की दाता है लेकिन हम जब तक किसी सन्त–सतगुरु की शरण में नहीं जाते तब तक हम इस धन को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु साहब कहते हैं:

साधसंग अगन सागर तरो ।

आग के समुन्द्र का नाम सुनकर दुनिया कांपती है। सावन सतगुरु कहा करते थे, ''अंदर अग्नि के बड़े–बड़े स्तंभ हैं अगर एक स्तंभ भी इस दुनिया में आ जाए तो दुनिया उसके ताप से जल जाएगी। मलीन आत्माएँ जिन्होंने यहां गलतियां की होती हैं उन्हें उन स्तंभों के साथ झप्पियां डलवाई जाती हैं।'' जिन महापुरुषों ने यह चीजें देखी होती हैं, ''वे बयान करते हैं कि सन्त–सतगुरु की मदद के बिना हम नाम के इस धन को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते।''

परमात्मा के भक्त, परमात्मा के प्यारे, परमात्मा से भी बढ़कर है क्योंकि उन्होंने उस परमात्मा को प्यार की ज़ंजीर के साथ बांध लिया है, अपने वश में कर लिया है। सन्त, परमात्मा के शरीक नहीं होते, वे परमात्मा के प्यारे बच्चे होते हैं। प्यारा बच्चा जो चाहे अपने पिता से करवा सकता है। गुरु साहब कहते हैं:

मेरी बाँधी भगतु छडावै बाँधै भगतु न छूटै मोहि

परमात्मा कहते हैं, ''मेरी बाँधी हुई को भक्त छुड़वा सकता है लेकिन भक्त की बाँधी हुई को मैं भी नहीं छुड़वा सकता अगर भक्त मुझे भी बांध दे तो मैं उससे यह नहीं पूछ सकता कि मुझे किस अपराध में बाँधा है?'' परमात्मा ने उन्हें यह मान–बड़ाई सिर्फ मातलोक में आने के कारण दी है।

साधू बोले सहज स्वभाव, साधू का बोलया बिरथा ना जाई।।

जो बोले पूरा सतगुरु सो परमेसर सुणआ।
सोई वरतआ जगत मे घट-घट मुख भणआ ।।

मूर्ख बोलता है तो कोई नहीं सुनता, सन्त-सतगुरु बोलते हैं तो परमात्मा सुनते हैं। सन्त कोई करामात नहीं दिखाते, कोई खेल नहीं करते। सन्तों की करामात देखनी हो तो उनके किसी सेवक को चोला छोड़ते हुए देखें, यही सन्तों की सबसे बड़ी करामात है।

सजण सेई आखिए जो चलदेयां नाल चलंन।
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दसंन।।

गुरु कौन हैं, सज्जन कौन हैं? जो मुश्किल समय में काम आए। वह समय मुश्किल का है जब हम इस संसार-समुन्द्र से जाते हैं, उस समय कोई भाई-बहन हमारी मदद नहीं कर सकता क्योंकि किसी को यह नहीं पता कि मौत किस वक्त आनी है, किस तरह आनी है। यह तो उस मालिक को ही पता है क्योंकि मौत का समय उसने ही तय किया हुआ है। गुरु खतरनाक से खतरनाक समय पर आकर भी संभाल करते हैं क्योंकि यह उनका बिरद है।

हमने भक्ति करनी है, यह अमोलक धन है। चोर इसे चुरा नहीं सकता, आग इसे जला नहीं सकती। हम जितनी भी भक्ति करते हैं वह हमारे खजाने में जमा हो जाएगी। एक घंटे के लिए दुनिया के कामों से मन को खाली करके बैठें, बस! मालिक ही याद आए।

लगातार, बिना रुके सिमरन इसलिए करते हैं क्योंकि सिमरन, आत्मा की सफाई के लिए झाड़ू का काम करता है। जिसने मकान को साफ करना है, उसे झाड़ू लगाना जरूरी है। हमें भी अपना मकान, जहां हम परमात्मा को बिठाना चाहते हैं, उसकी सफाई की तरफ तवज्जो देनी चाहिए, हमेशा **सिमरन का झाड़ू** लगाना चाहिए। ******

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

कर्म और बीमा

02 जनवरी 1991 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान DVD 611 (5)

एक प्रेमी: *– मेरा कर्मों के बारे में एक अजीबो–गरीब सवाल है अगर हमारे कर्मों में बीमारी आने वाली है जिसमें हमें शारीरिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ेगी, डॉक्टर और दवाई पर भी खर्च होगा। जब हमारे ऊपर इस तरह का कर्म आता है तो क्या हमें उसे बर्दाश्त करना चाहिए और सब कुछ गुरु पर ही छोड़ देना चाहिए या अचानक आने वाले उस कर्म के लिए बीमा पोलिसी ले लेनी चाहिए। आप मुझे इस बारे में कुछ सुझाव दें?*

बाबा जी: – हाँ भई, बहुत अच्छा सवाल है। मैं आपको अपनी तरफ से कुछ बताने की बजाय महाराज सावन सिंह जी का कहा हुआ वचन ही दोहरा देता हूँ। मैंने पहले भी कई बार यह वचन सतसंगों में दोहराया है। महाराज कृपाल ने भी कर्मों के बारे में अपने सतसंगो में इसकी पुष्टि की है। तुलसी साहब कहते हैं:

कर्मप्रधान विश्व रच राखा, जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव माता के गर्भ में बाद में आता है लेकिन उसकी प्रालब्ध पहले ही तैयार हो जाती है। सुख–दुःख, गरीबी–अमीरी, बीमारी–तंदरूस्ती ये छह चीजें पहले ही मुकर्रर हो जाती हैं लेकिन जीव इसलिए परेशान होता है क्योंकि जीव को उसके कारण का ज्ञान नहीं होता।'' तुलसी साहब कहते हैं:

पहले बनी प्रालब्ध पाछे बना शरीर।
तुलसीदासा खेल अचरज है पर मन नहीं बंधदा धीर।।

आपको नामदान के वक्त बताया जाता है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं, शरीर तो हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए ही मिला है। महाराज

कृपाल कहा करते थे, ''जो तीर कमान में से निकल गया है वह हाथ नहीं आता चाहे जो मर्जी यत्न कर लें। जो प्रालब्ध बन गई है सन्त उसे नहीं छेड़ते, जीव को 'शब्द-धुन' के साथ जोड़ देते हैं।''

आपको सदा ही बताया जाता है कि हमारी आत्मा पर स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीन पर्दे चढ़े हुए हैं। जैसे एक पिंजरे में दूसरा और दूसरे में तीसरा है। स्थूल जगत सूक्ष्म में से निकला है अगर हम सन्तों के कहे मुताबिक अपनी आत्मा से स्थूल पर्दा उतारकर सूक्ष्म में पहुँच जाएं तो हमें हर घटना का ज्ञान हो जाता है कि इस घटना के पीछे क्या कारण है और यह घटना क्यों घटी है? फिर यह किताब की तरह खुल जाता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्त जब नामदान बख्शते हैं, उस समय सेवक के अंदर इस किस्म का इंतजाम कर देते हैं कि यह कर्मों का भुगतान भी करता रहता है और अंदर तरक्की भी करता रहता है।''

हम काल की नगरी स्थूल जगत में बैठे हैं, यह काल की रचना है, बदले का देश है। जो किसी की आँख निकालता है काल उसे आँख की ही सजा देता है। जो किसी का कत्ल करता है वह अगले जन्म में उसी किस्म का भुगतान करता है। दयाल के राज में माफी है वहाँ बदले का नामोनिशान नहीं। जब हम काल की हद पार करके दयाल के देश में पहुँच जाते हैं तो हमें माफी मिल जाती है। गुरु हमें संसार में माफी देने के लिए ही आता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ।।
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना।

अब सवाल यह उठता है अगर हमें पता हो तो हम उसका इंतजाम कर लें। जब हम जन्मकुंडली देखने वाले ज्योतिषी लोगों के पास जाते हैं तो वे बहुत सी भविष्यवाणियां करते हैं। किसी की भविष्यवाणी गलत तो किसी की सही निकलती है। ज्योतिषी, लोगों को बताते हैं कि तेरे ऊपर

यह ग्रह है, उपाय करने से यह ठीक हो सकता है लेकिन सन्तों का जातिय तजुर्बा है कि वे कर्म नहीं टाल सकते, कर्म जरूर भोगना पड़ता है। सन्त हमें इन भविष्यवाणी करने वालों के पास नहीं भेजते और न खुद ही इन पर ऐतबार करते हैं। सन्त कहते हैंः

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि।

इस बारे में, मैं अपने एक रिश्तेदार की कहानी बताता हूँ जो मैंने पहले भी सतसंग में बताई है कि वह किसी जन्मकुंडली देखने वाले पंडित के पास गया उसने पंडित को कुछ पैसे दिए। पंडित ने गणित विद्या के हिसाब से कुछ ग्रह देखकर उसे बताया कि तू इस महीने में किसी रिश्तेदारी में जाएगा वहाँ जाकर बीमार हो जाएगा और बचेगा नहीं। वह उस महीने में उस रिश्तेदारी में नहीं गया क्योंकि उसे वहम में डाला हुआ था। वह अगले महीने उसी रिश्तेदारी में चला गया, वहाँ जाकर उसे मामूली सा बुखार हुआ। उसे बुखार की तकलीफ तो कम थी लेकिन उसके दिल में ज्योतिषी के बताए मुताबिक वहम ज्यादा था।

मैं उन दिनों वैदिक चिकित्सा किया करता था। उसके रिश्तेदार ने मेरे पास आकर कहा कि तुम्हारा सरदार जी चोला छोड़ने को तैयार है। मैं जीप लेकर दो घंटे का सफर करके जल्दी से उसके पास पहुँचा। वह मेरे साथ इस किस्म की बातें करे कि जैसे वह अभी चोला छोड़ने वाला है और बार–बार यह भी कह रहा था कि आप पंडितों–ज्योतिषियों की बात नहीं मानते लेकिन ज्योतिषी ने जो कहा था वह पूरा होने लगा है। मैंने उससे कहा, ''मैं वैद्य हूँ। मैं तुझे गुरु का आसरा रखकर दवाई दूंगा। मैं तुझे लिखकर देता हूँ कि मैं अभी तुझे मरने नहीं दूंगा आखिर एक दिन तो तूने मरना ही है।''

जब हम वहाँ से चलने लगे तो उसके रिश्तेदार कई किस्म के शगुन मनाने लगे। मैंने कहा, ''प्यारेयो, गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि शगुन

अपशगुन उन्हें लगते हैं जो प्रभु को याद नहीं करते।'' मैंने उसे दवाई दी, वह गाँव आते-आते बिल्कुल ठीक हो गया। शाम के समय घरवाली से कहने लगा कि बाबा जी बात तो नहीं मानते लेकिन देख! पंडित का कहना पूरा हो गया।'' वह फिर भी दिल से यह नहीं मान रहा था कि मैंने बचना नहीं है। मैंने बहुत कठोर होकर कहा, ''मैंने दवाई दी है तू मरकर दिखा।''

यह वाक्या कम से कम तीस साल पहले का है। वह प्रेमी अभी भी सतसंग में आता है। हम हँसकर उससे पूछते हैं कि तू अभी भी जिंदा है। प्यारेयो, किसी आने वाले भविष्य की चिन्ता करके दिल को सुखाना बीमार होने से पहले ही बीमार हो जाना, कितनी बुरी बात है। पता नहीं वह घटना घटे या न ही घटे।

मैं बीमा करवाने को बुरा नहीं कहता, दुनिया में बीमें की स्कीम अच्छी है अगर कोई चाहे तो बीमा करवा सकता है। अब सवाल उठता है कि हमें कर्मों का भुगतान बर्दाश्त करना चाहिए या उसका कोई उपाय करना चाहिए? सभी सन्तों ने यह कहा है कि बीमारी का इलाज करवाना हमारा पहला फर्ज है लेकिन हमें भाणा भी मानना चाहिए कि यह कष्ट हमारे ही कर्मों की वजह से है। इससे हमारा डाक्टरों के साथ जो पिछला देन-लेन है उसका भुगतान हो जाता है, कुछ कर्मों का कर्ज हल्का हो जाता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दुःख की घड़ी गनीमत जानो, सुख में रहत सदा मन गाफिल।

सुख में हमारा मन गाफिल हो जाता है। दुःख के समय हमारे मन का झुकाव परमात्मा की तरफ होता है। हम अंदर सच्चे दिल से फरियाद भी करते हैं कि हमें बख्शें, पैसे से भी कुछ भुगतान हल्का होता रहता है।

सन्त हमें हाथ के ऊपर हाथ रखने के लिए कभी नहीं कहते। पुरुषार्थ करना इंसान का पहला फर्ज है। हमें दो प्रकार के रोग लगते हैं अगर हम ठंडे दिल से सोचें तो उनका पता लगाना भी मुश्किल नहीं होता। एक रोग

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

तो हमें अपनी गलती से लगा होता है, वह रोग थोड़ा सा उपाय करने से खत्म हो जाता है और शरीर तंदरूस्त हो जाता है। दूसरा रोग कर्मों की वजह से हमें बीमारी आती है जो भोगे बिना नहीं जाती।

मैंने पहले ही बताया है कि डॉक्टर का लेन–देन और दवाई पर पैसा लगने से हमारा बोझ हल्का हो जाता है। अगर इलाज करवाने के बाद हमें सफलता नहीं मिलती तो हम गुरु भगवान में नुख्स न निकालें कि हमारी मदद नहीं हो रही। गुरु हमारी मुनासिब मदद जरूर करता है। ऐसे मौके पर हमें बर्दाश्त से काम लेना चाहिए, भाणा मानने में ही फायदा होता है।

आयुर्वेद में जड़ी–बूटियों का वर्णन किया गया है। वहाँ गोरखनाथ की एक छोटी सी मशहूर कहानी दी हुई है। गोरखनाथ अच्छी कमाई वाले थे, उनके सिर पर फोड़ा था जिसका उन्होंने बहुत इलाज करवाया लेकिन वह फोड़ा बढ़ता गया ठीक नहीं हुआ। गोरखनाथ ने उस फोड़े का कष्ट बारह साल भोगा। बारह साल बाद जब उस कर्म की अवधि पूरी हो गई तो जो बूटी उनके तप–स्थान के पास थी वह बोली कि गोरखनाथ, ''तू मुझे रगड़कर फोड़े पर लगा, मैं तेरा फोड़ा ठीक कर दूंगी।'' गोरखनाथ को कर्मों की फिलॉसफी का ज्ञान था। गोरखनाथ ने उस बूटी से कहा, ''अब इस कर्म की अवधि पूरी हो गई है। तू पहले भी यहीं पर थी लेकिन तू अब बोली है तो तेरा नाम गोरखमुंडी हो गया।'' आमतौर पर फोड़े–फुन्सियों के लिए जो दवाई बनाई जाती है उसमें गोरखमुंडी का ही इस्तेमाल करते हैं।

जब हम कर्मों का भुगतान करते हुए किसी डॉक्टर के पास जाते हैं तो डॉक्टर को हमारे साथ पूरी हमदर्दी होती है। कोई डॉक्टर यह नहीं चाहता कि मेरा मरीज दुखी हो। वह तन–मन से चाहता है कि मेरा मरीज जल्दी तंदरूस्त हो और मुझे यश मिले लेकिन कई बार ऐसा होता है कि अभी हमारा कर्म बाकी होता है। हमें डॉक्टर में दोष नहीं निकालना चाहिए, ऐसे मौके पर सब्र करना बहुत जरूरी है।

महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंगों में कर्मों के लेन-देन के बारे में एक कहानी सुनाया करते थे कि किस तरह अगले जन्म में वहाँ जाकर लेन-देन पूरा करना पड़ता है। वे फरंटियर की तरफ आर्मी में नौकरी करते थे। आर्मी में साहूकार लोगों की कैन्टीन होती है। आर्मी के लोग अपना पैसा उन साहूकारों के पास जमा करवाते हैं, जब छुट्टी पर जाते हैं तो साहूकार से अपना पैसा ले लेते हैं।

यह उनका चश्मदीद वाक्या है, वह एक सिपाही का वाक्या सुनाया करते थे। उस समय पठान सीमाप्रान्त में बगावत कर रहे थे। एक सिपाही की घोड़ी भागकर दुश्मन के इलाके में चली गई। वहाँ दुश्मन के लोगों ने घोड़ी को कई गोलियां मारी, गोली सिपाही को भी लगी और वह मर गया। सरकार का यह कायदा है कि सिपाही का हिसाब-किताब उसके वारिसों को दे देते हैं। सरकार ने तो अपने कायदे कानून के हिसाब से वारिसों को पैसा दे दिया लेकिन उस सिपाही के ढाई हजार रूपये साहूकार के पास जमा थे, साहूकार ने लालचवश सिपाही के पैसे उसके वारिसों को नहीं दिए। वह साहूकार सहारनपुर का था।

समय पाकर वह सिपाही, लड़का बनकर उस साहूकार के घर पैदा हुआ। वह जवान हो गया उसकी शादी की, शादी के बाद वह लड़का बीमार रहने लगा। साहूकार के पास बहुत पैसा था, उसने अच्छे-अच्छे डॉक्टर बुलवाए, बहुत खर्च किया लेकिन लड़का ठीक नहीं हुआ। जब बंदा हर तरफ से थक जाता है, दुखी हो जाता है तो दुखिए को झूठ भी प्यारा लगता है। साहूकार ने सोचा, किसी तागे-तावीज वाले से ही इलाज करवाया जाए शायद इन लोगों की ही दुआ लग जाए।

शहर के बाहर एक मौलवी रहता था। साहूकार ने मौलवी के पास जाकर कहा, ''मेरा एक ही लड़का है, मैंने अभी उसकी शादी की है। मैंने अपने लड़के का बहुत इलाज करवाया है लेकिन वह ठीक नहीं हुआ

अगर आप उसकी कोई दवाई–बूटी कर दें तो मैं आपका बहुत धन्यवादी होऊंगा।'' मौलवी ने साहूकार से कहा, ''मैं तेरे घर चलकर लड़के पर दम करता हूँ वह ठीक हो जाएगा।''

जब मौलवी ने साहूकार के घर आकर लड़के पर दम किया तो लड़का कुछ होश में आया। साहूकार को बहुत खुशी हुई कि मेरे लड़के ने आज आँखें खोली हैं। साहूकार ने अपनी जेब में हाथ डाला कि मैं मौलवी को बहुत कुछ दूं लेकिन उस समय उसकी जेब में ढाई रूपये थे। साहूकार ने मौलवी को ढाई रूपये देकर कहा, ''मेरी जेब में बहुत पैसे होते हैं लेकिन इस समय ढाई रूपये ही हैं तू इन्हें ले ले, मैं शाम को तुझे खुश कर दूँगा।'' मौलवी ने कहा कि अभी तो मैंने एक दम ही किया है यह कितना अच्छा हो गया। मैं जब शाम को दम करने आऊँगा तो यह बिल्कुल ठीक हो जाएगा।

जब मौलवी घर से चला गया तो साहूकार ने लड़के से पूछा, ''बेटा, अब तू ठीक महसूस कर रहा है?'' लड़के ने साहूकार से कहा, ''तू मुझे पहचानता है कि मैं कौन हूँ? मैं वही सिपाही हूँ जिसके तेरे पास ढाई हजार रूपये जमा थे। तू हिसाब करके देख ले मेरी बीमारी में जो पैसे लगे हैं उसमें से ढाई रूपये ही बचते थे, मैं वह पैसे भी दिलवाकर जा रहा हूँ। मैं जिसे ब्याहकर लाया हूँ, यह वही घोड़ी है जिसने मुझे मरवाया था। मैं तेरे साथ भी भुगतान करके जा रहा हूँ और घोड़ी की यह सजा है कि अब यह सारी जिंदगी रोया करेगी।''

महाराज जी ने बताया कि जब मैं हरिद्वार से वापिस आ रहा था तो मुझे स्टेशन पर वह साहूकार मिला। साहूकार मुझे अपने घर ले गया कि आज रात आप यहीं रूके। अगर वह लड़का साहूकार को न बताता तो साहूकार बहुत रोता–पीटता लेकिन जब लड़के ने बता दिया तो साहूकार किसको रोए? लोगों ने चर्चा की कि इसका जवान बेटा मर गया है, बहू विधवा हो गई है और यह रोता तक नहीं, यह कितना कठोर आदमी है।

साहूकार अंदर ही अंदर खामोश था। शाम को अच्छे से अच्छे खाने बनाकर परोसे गए तो उसकी पत्नी भी रोने लगी कि हमारा लड़का गुजर गया है, इसके दिल को कोई दुख नहीं। बहू रोने लगी कि मेरा पति मर गया है इसे अच्छे खाने की पड़ी है। जब रोने की आवाज आई तो महाराज जी ने पूछा, ''यह किसके रोने की आवाज है?'' साहूकार ने कहा कि आप खाना खाएं, आपने क्या लेना है। महाराज जी ने कहा पहले बता तो सही फिर खाना खाएंगे।

साहूकार ने सारी कहानी बताई कि किस तरह घोड़ी ने सिपाही को मरवा दिया था। मैंने लालचवश उस सिपाही के ढाई हजार रूपये दबा लिए थे। वह सिपाही मेरे घर लड़का बनकर पैदा हुआ, वह मुझसे अपना सारा कर्ज ले गया है और मरते हुए मुझे यह भी बता गया है कि मैं तेरा लड़का नहीं, मैं वह सिपाही हूँ। मैं अपना कर्ज लेने आया था जो पूरा कर लिया है। यह वही घोड़ी है जो मुझे दुश्मन के इलाके में ले गई थी। इसकी यही सजा है कि अब यह सारी जिंदगी रोएगी। महाराज जी, अब आप बताएं कि मर गया सिपाही, रोती है घोड़ी, मैं किसे रोऊं? महाराज जी यह वाक्या आम सतसंग में सुनाया करते थे।

हाँ भई, यह सवाल सब प्रेमियों के लिए बहुत अच्छा था। इस पर बहुत कुछ बोला जा सकता है लेकिन समय हो गया है। सबसे अच्छा यह है कि हम अपने फैले हुए ख्यालों को सिमरन के जरिए इकट्ठा करें, तीसरे तिल पर एकाग्र हों अंदर जाकर ही असली फिलॉसफी का पता लगता है कि यह घटना क्यों घटी? हम यह किस कर्म का लेखा-जोखा दे रहे हैं।

सेहत को ठीक रखने के लिए सभी सन्त खुद भी दवाई-बूटी करते रहे हैं और हमें भी हिदायत करते हैं कि हाथ पर हाथ रखने की बजाय दवाई-बूटी जरूर करें ताकि आप कर्मों का भुगतान भी करते रहें और थोड़ी बहुत आराम की जिंदगी बिता सकें। ✻✻✻

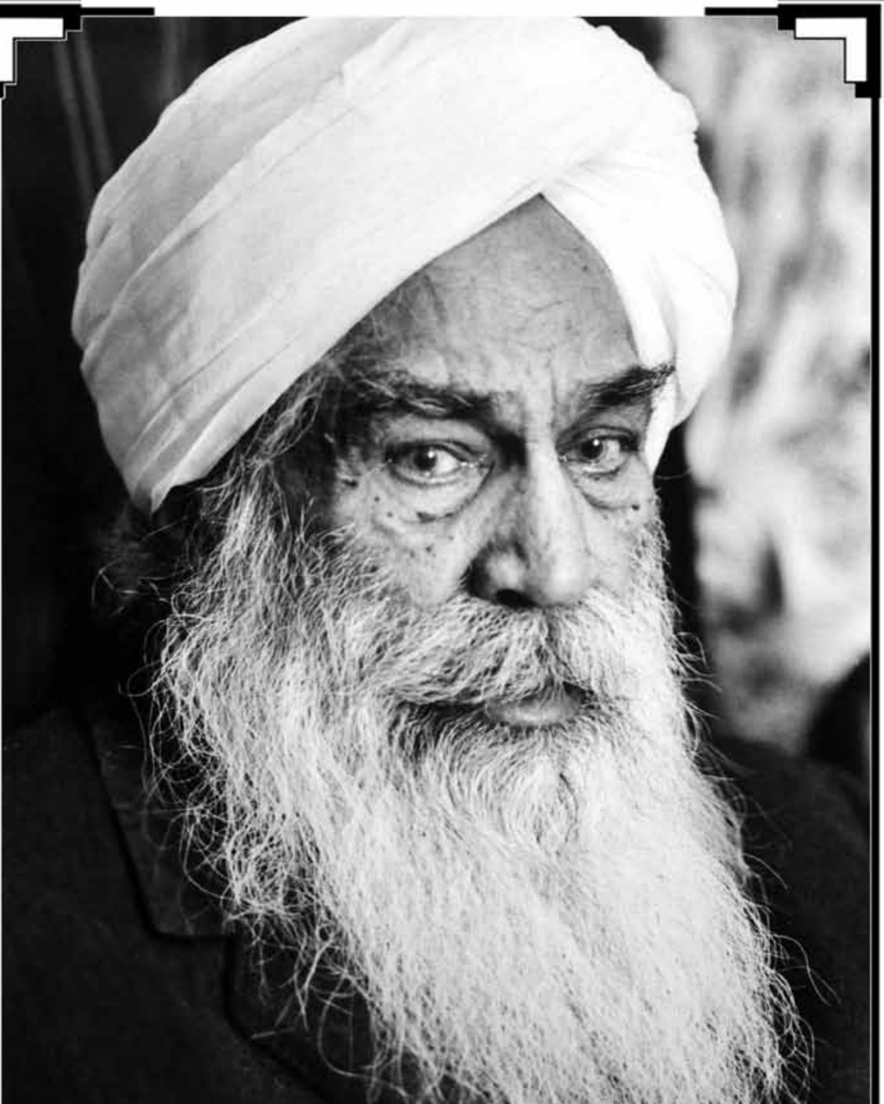

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

मेरे जीवन का संदेश

इंसानी जामा संपूर्ण सृष्टि में सबसे ऊँची सीढ़ी है, यह सौभाग्य से प्राप्त होता है। आपको इंसानी जामा प्रभु प्राप्ति और रूहानी परिपूर्णता के लिए प्रदान किया गया है। यह जामा उस पूर्ण चेतन सत्ता का शानदार अनुभव प्राप्त करने के लिए परिश्रम करने का उत्तम अवसर है, यह अवसर उस महान उद्देश्य को उपयोग में लाने के लिए होना चाहिए।

मनुष्य जीवन के इस महान उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए विभिन्न प्रकार के धर्म और मत–मतान्तर विकसित किए गए हैं, यही सभी धर्मों का समान आधार है। आपको आपके अंदर बैठी हुई प्रभुसत्ता से अनुभव देकर जोड़ दिया गया है, आपको उस मार्ग पर डाल दिया गया है, अब आपको नियमित अभ्यास द्वारा इसे दिन–प्रतिदिन विकसित करना है।

इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आपको अच्छा जीवन बिताते हुए अपने चरित्र को शुद्ध रखना है। अपने जीवन की गतिविधियों में सच्चाई, शुद्धता, प्यार, निस्वार्थता और उचित गुणों को उत्पन्न करना है।

हमने नफरत को छोड़ना है, अहंकार और क्रोध को दूर भगाना है, हिंसा का परित्याग करना है। अपने अंदर प्यार, वफादारी, दीनता, क्षमा और अहिंसा को धारण करने की प्रतिज्ञा करनी है। युद्ध और ताकत की भूख का परित्याग करके अपने हृदय में कृपा, दया और विश्वव्यापी प्यार भरें। अपने अंदर वह प्यार भरें जो देशों व जातियों में जगमगाए। आपके जीवन में सच्चे धर्म का अनुशासन हो।

परमात्मा से प्यार करें, सबसे प्यार करें, सबकी सेवा करें, सबके लिए आदर भाव रखें क्योंकि प्रत्येक इंसान में परमात्मा समाया हुआ है। एकता

का संदेश फैलाएं और एकता का जीवन यापन करें। धरती पर शक्ति होगी यही **मेरे जीवन का संदेश** है; मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह पूर्ण होगा।

सबको बहुत–बहुत प्यार

कृपाल सिंह

धन्य अजायब

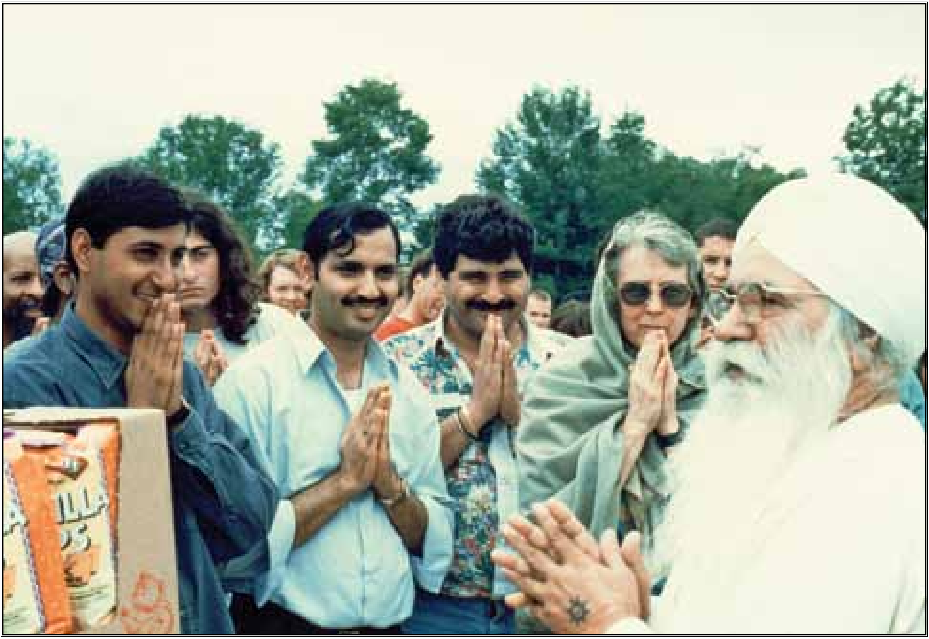

सतसंग के कार्यक्रमों का विवरण :–

1	19 , 20, 21 मई–2023	शुक्रवार से रविवार	दिल्ली
2	07, 08 ,09 जुलाई–2023	शुक्रवार से रविवार	अहमदाबाद
3	04, 05, 06 अगस्त–2023	शुक्रवार से रविवार	जयपुर

RNI No - RAJHIN/2003/9899